'योगी माना प्यारी-न्यारी-एवरहैप्पी जीवन वाले' दादी जी

आप सभी महावीर पाण्डव, चाहे हमारी मातायें शिव की शक्तियाँ, चाहे हमारी प्यारी तपस्वी सेवा करने वाली टीचर्स बहनें, चाहे हमारी छोटी-छोटी कुमारियाँ अथवा बच्चे... कल प्यारे बाबा ने हरेक को अपने-अपने वरदान दिये हैं। आधाकल्प से तो भगवान से दुआयें अथवा वरदान मांगते रहे, अभी हमें सम्मुख में डायरेक्ट प्यारा बाबा वरदानों से हमारी झोली भर रहा है। हम उन्हें प्यार से बाबा कहते हैं, लोग उनको भावना से भगवान कहते हैं। वह मांगते हैं, पुकारते हैं, ढूंढते हैं और हमें डायरेक्ट स्वयं भगवान ने निमंत्रण दे बुलाता है और वरदानों से झोली भर देता है। तो आप सबको बाबा ने निमंत्रण देकर बुलाया है कि 'ओ मेरे कल्प पहले वाले सिकीलधे बच्चे मधुबन घर में आओ, मैं तुम बच्चों से सन्मुख में आए मिलूँगा।' क्या यह वन्डरफुल बात दुनिया वाले कभी सोच भी सकते हैं? कोई पूछे आप कहाँ जा रहे हो? यह तो वे कह देंगे कि आबू में जा रहे हो, पर हमें भगवान ने डायरेक्ट बुलाया है और हम उनसे डायरेक्ट मिलेंगे, जिस मिलन से हम अपने जीवन की सब आशायें पूरी करेंगे अथवा वरदानों से झोली भरेंगे। यह कोई स्वप्न में भी सोच नहीं सकता और हम भाग्यवान बच्चे डायरेक्ट उसका अनुभव कर रहे हैं।

बाबा हम बच्चों में शक्ति भरते, अपने महावाक्यों से सजाते हैं। कहते हैं बच्चे सामने देखो अब कौन-सा समय आकर पहुँचा है, बाबा बच्चों को समय की सूचना देता है, साथ-साथ इशारा करता कि बच्चे अभी तुम्हें योगी लाइफ, ज्ञानी लाइफ में ऊंचा जाना है। परिपक्व अवस्था बनानी है। अब टाइम नहीं है जो कहो हाँ बाबा पुरुषार्थ तो करते हैं, हो जायेंगे। अब बाबा को बच्चों का यह जवाब नहीं चाहिए। देखेंगे, करेंगे, लेकिन बाबा यह जवाब अब मंजूर नहीं करता। जब समय की सूचनायें सुन वा देख रहे हो, तो योगी की स्थिति क्या हो, योगी जीवन क्या हो? जब कहते हो, जानते हो कि हमें डायरेक्ट शिवबाबा, भगवान मिला है। तो क्या हमारे सर्व सम्बन्ध उस प्यारे बाबा से हैं? प्रैक्टिकल मेरा सो तेरा किया है? कभी यह ठगी तो नहीं करते कि बाबा तेरा सो मेरा, मेरे को हाथ न लगाना...। अपने से पूछो, जब कहते हो, हाँ बाबा आपसे ही मेरे सब नाते हैं तो क्या उस एक से ही सर्व सम्बन्ध निभाते हो या कहते बाबा क्या करें प्रवृत्ति में चलना पड़ता, निभाना पड़ता। एक होता है निभाना और दूसरा अपने को सेफ करने लिए हथियार बना दिया है कि निभाना होता है....। उसमें ममता होती है। त्याग नहीं है लेकिन ममता है।

वास्तव में हम ज्ञानी तू आत्मा, योगी तू आत्माओं की स्थिति क्या है? योगी आत्मा की स्थिति का वर्णन है - एवरहेल्दी, एवरवेल्दी और एवर हैपी। तो अपने आप से पूछो कि मैं ऐसी हूँ? माइन्ड से एवरहैपी हूँ? एवर हेल्दी, एवरवेल्दी हूँ? मेरा माइन्ड कभी भी कोई भी सेकेण्ड, किसी भी कारणों से अपसेट तो नहीं होता है? मेरे माइन्ड में कारणें-अकारणे व्यर्थ संकल्प तो नहीं चलते हैं, जिसमें टाइम, एनर्जी वेस्ट होती हो? अगर कोई भी मज़बूरियों से परेशान होते हैं तो योग में मजा नहीं आयेगा, योग लगेगा ही नहीं। याद में बैठेंगे लेकिन बुद्धि यहाँ वहाँ भटकती रहेगी।

बाबा ने जो कार्य दिया है वो इतना सही चले जो सदा भगवान की आफरीन मिलती रहे। आफरीन कहो वा वरदान कहो, चाहे दुआ कहो वो सब मिलें और सबकी मिलें। इसके लिए मूल धारणा है -- योगी की जीवन जितनी ही प्यारी रहे, उतनी ही न्यारी... यह है जीवन का महा मन्त्र। योगी जीवन माना प्यारी और न्यारी जीवन। सर्व के प्यारे बनो और सर्व से न्यारे रहो तो बैलेन्स रहता है। अगर कोई कहते हैं बहुत बडी जवाबदारियाँ हैं। वह तो हैं ही। यह भी ड्रामा में पार्ट है, उस पार्ट को हीरो बनकर बजाओ। अगर पार्ट बजाते हीरो पार्ट न हो तो ड्रामा में अपना स्टेटस गंवाते। परिस्थितियाँ हमारी मास्टर हैं तो हम फिर उनके भी मास्टर हैं। परिस्थितियाँ है माया की, दुनिया की और हम मास्टर हैं भगवान के, भगवान हमारा मास्टर है। बाबा हम

बच्चों को कहते -- मास्टर सर्वशक्तिवान। तो क्या परिस्थितियाँ मास्टर हैं या हम मास्टर सर्वशक्तिवान है? हमारा क्या टाइटल है? बाबा कहेगा क्या कि दुनिया की परिस्थितियाँ ऐसी हैं, तो मैं भगवान भी क्या करूँ, मैं कुछ नहीं कर सकता... कभी बाबा यह शब्द बोलेगा! वह सर्वशक्तिवान गाया ही इसलिए गया है कि वह सबको शक्ति वा दुआयें देता है। जब वह क्यों क्या नहीं कहता तो मैं मास्टर सर्वशक्तिवान क्यों, क्या की क्यू क्यों लगाऊं? मैं क्यों प्रॉबलम बनूँ? मैं उन स्थितियों के लिए परेशान क्यों हूँ?

जैसे हम कहते हैं यह सृष्टि-चक्र का नियम है दिन पीछे रात, रात पीछे दिन... आयेगा। कोई कहेगा ऐसा क्यों? जैसे सर्दी, गर्मी, आयेगी तो कहेंगे क्या कि क्यों आई? मैं तो गर्मी नहीं सह सकती, तो क्या तुम्हारे कहने से गर्मी नहीं आयेगी! या कहो मेरे से तो सर्दी नहीं सहन होती है, तो क्या तुम्हारे कारण सर्दी नहीं आयेगी? तुम उसके लिए साधन करो। ऐसे ही इस सृष्टि चक्र में जब हम ड्रामा में खेल खेलने के लिए खिलाडी बने हैं, तो खिलाडियों को तो सारा खेल करना है। सदा यह स्मृति रहे कि मुझे ऐसी स्थिति रखनी है जो मुझे देख सब फालो करें। अच्छी स्थिति होगी तो सब अच्छी प्रेरणा लेंगे, और वह प्रेरणा लेना यही मेरे लिए दुआयें हैं। अगर अच्छी स्थिति नहीं रखेंगे तो दूसरे भी उनका एडवान्टेज़ लेंगे और उन्हों की भी अच्छी स्थिति नहीं रहेगी। तो उस न रहने की बद्दुआ भी मुझे मिलेगी। अब हम सभी ब्रह्माकुमार, ब्रह्माकुमारियाँ हैं। एक ही नाम है, दो नाम नहीं है। तो हमें क्या करना है? हमारी बुद्धि में सामने में क्या है? हमें बाप समान बनना है या हमें तो दुनियादारी है, हमें प्रवृत्ति में रहते समान बनना मुश्किल है?

बाप समान की स्थिति क्या होती है? सी बाबा या कहेंगे वो तो निराकार है। नहीं, अभी तो बापदादा हर कदम में हमें पालना देता। सीखना क्या है? हमें बाप समान बनना है। कहते हैं बाबा को प्रत्यक्ष करना है, तो हमेशा हमारा सवाल उठता, अरे! क्या कहने से बाबा प्रत्यक्ष हो जायेगा, भाषण से प्रत्यक्ष होगा या हमारी बाप समान स्थिति ही बाप को प्रत्यक्ष करेगी? जब बाप समान बनना है तो जो बाप की समान बनने लिए शिक्षायें हैं, उन शिक्षाओं को जीवन में धारण कर ऐसी स्थिति बनानी है। इसलिए योगी के लक्षण वर्णन करते हैं कि -- निन्दा-स्तुति, जय-पराजय, सर्दी-गर्मी... सबमें समान रहें। योगी माना अचल-अडोल, स्थिर, निर्भय, निर्वैर.. योगी माना कमलफुल समान न्यारा प्यारा। और उसकी विधि है इस अनादि अविनाशी ड्रामा में साक्षी होकर खेल देखो और साक्षी (न्यारा) बन कर खेल करो। देह-अभिमान के कारण ही अपने को ऊंची स्थिति से नीचे ले आते हैं। इसलिए कारण का निवारण ही है सी फादर करना, बाप समान देही अभिमानी रहना, मैं तो योगी तू आत्मा हूँ यह याद रखना। निन्दा-स्तुति, मान-अपमान... यह सब कारण है देह-अभिमान के। तो बाबा कहते इसका चार्ट रखो, पुरुषार्थ करो।

अरे! बाबा ने तुम्हें इतना ऊंचा, सयाना बनाया तो अभी तक तू छोटा बच्चा हो क्या! जो बाबा कहे -- बच्चे, क्रोध नहीं करो। बच्चे, तुम समान बनो। बच्चे, तुम चार्ट रखो। बच्चे, तुम यह करो... क्या अभी तक भी छोटे बच्चे हैं क्या? नहीं। बाबा कहते -- अभी तुम सभी ज्ञानी तू आत्मा, मेरे समान बच्चे हो। तो क्या यह बाबा का वरदान हम सबके लिए है या इस कान से सुनके इस कान से निकालने का है? क्या है? बच्चे, तुम सभी कौन हो? मेरे समान ज्ञानी तू आत्मा हो, एक्टर हो, खेल है और बाबा ऑर्डर करता है बच्चे नष्टोमोहा बनो। कोई ममता नहीं। अगर यह बाबा की आज्ञा आज नहीं मानेंगे तो कब मानेंगे? कौन-सी कल आयेगी जिसमें मानेंगे! यहाँ कहेंगे अभी मानते और यहाँ गेट से बाहर जाकर कहेंगे हाँ, बाबा करेंगे, देखेंगे.... क्या यह भगवान से ठगी नहीं है? बोलो, किसके बच्चे हो? किससे ममता है? किसको जीवन दी है?

अभी दुनिया की परिस्थितियाँ देखो कैसी हैं। चारों तरफ लडाइयों का भय है। आज एक परिस्थिति तो कल दूसरी। अपने परिवार वालों से भी एक दो में विश्वास नहीं है। आये दिन कैसी कैसी वन्डरफुल न्युज़ सुनने को मिलती है। बच्चे ही माँ बाप को मार डालते। कभी क्या न्युज़ होती, कभी क्या.... यह सब देखते हम क्या

कहेंगे -- चलो, यह भी ड्रामा की भावी क्योंकि कर भी क्या सकते हैं इसलिए ओम शान्ति। ठीक इसी प्रकार अपने भी परिवार में कुछ हो तो क्या करेंगे, क्या कहेंगे? यही कहेंगे ना -- ड्रामा की भावी। या इससे आगे दूसरा भी शब्द है? नहीं। यह सब है नथिंग न्यू क्योंकि बाबा कहते -- यह अचानक सब होना ही है। तो जब होना ही है, तो हम किसकी चिन्ता करें। आप अपने योग की मस्ती में रहो। ब्राह्मण जीवन अर्थात् कुछ भी होता तो क्वेश्चन मार्क और आश्चर्यवाचक शब्द खत्म। जो हो रहा है नथिंग न्यू क्योंकि हमारे हर कदम में कल्याण समाया हुआ है। हम त्रिकालदर्शी, त्रिलोकीनाथ हैं, तो हमें बेचैन होने की जरूरत नहीं है। इसलिए कुछ भी होता है तो हमें शान्ति की किरणें फैलाने का अपना कर्तव्य करना है। बाबा भी कहते -- यह तो सब कुछ होगा, तुमको अपनी न्यारी प्यारी मस्ती में मस्त रहना है, दूसरा कुछ नहीं देखना है।

तो मीठी मातायें आप बाबा-बाबा का मन्त्र जपते हो, भले जपो पर साथ-साथ आपका नाम है शेरनी शक्तियाँ। तो मीठी-मीठी मातायें, भोली-भोली गाँव की मातायें, गरीब निवाज़ बाबा की प्यारी शक्तियाँ, आज अन्जाम (वायदा) करो -- 'हम कब रोयेंगे नहीं, चाहे कोई मरे चाहे कोई जिये।' मेरे लिए सारी दुनिया मरी पडी है, यह हो सकता है? आप मुये मर गयी दुनिया। मेरा बाबा। मेरा बाबा तो है अमर, बाकी दुनिया तो मरी पडी है। तो मेरा बाबा, अमर बाबा याद करेंगे या कोई चला गया, कुछ हुआ तो हाय-हाय-हाय करेंगे! हाय-हाय कहेंगे या वाह! बाबा वाह! बाबा, जो हुआ सो अच्छा हुआ। तो ऐसे न्यारी और प्यारी, मीठी-मीठी स्थिति बनानी है।

बाबा स्वीट, हम पाण्डव स्वीट। हमारा पाण्डव पति स्वयं भगवान है तो बाकी क्या डर है! इसलिए बाबा कहते -- अपनी जीवन कर दो भगवान के हवाले और आप सभी निमित्त मात्र अपनी प्रवृत्ति सम्भालो। चलाओ पर न्यारे प्यारे बनकर चलाओ। न हूँ मैं किसी का साथी, न है कोई मेरा साथी, आये अकेले जाना अकेले। तो पाण्डव सभी समझें कि मैं हूँ राजयोगी। जैसे ब्रह्मा बाबा जितना ही समर्पण, जितना ही न्यारा उतना ही सारे बेहद परिवार का प्यारा बना रहा तो पाण्डव फॉलो करो, पाण्डव-पिता ब्रह्मा बाबा को।

टीचर्स माना ऑनेस्ट। आनेस्टी है कि आप बाबा की अमानत को प्यार से सम्भालो, ऐसे नहीं यह तो मेरा सेन्टर है, मैंने मेहनत करके जमाया है, कितना हमें ध्यान देना पड़ता? ध्यान देना पड़ता तो क्या सेन्टर तेरा है, फिर तो तुम निमित्त सेवाधारी नहीं हुई। इसलिए जो स्थिति बाप समान बननी चाहिए, वह नहीं बनती है। व्यर्थ संकल्प चलते हैं। अगर सदा यह स्मृति में रहे कि सब कुछ बाबा तेरा है। मैं तो ट्रस्टी हूँ, निमित्त हूँ, चलाने वाले आप हो। तो प्यार से काम भी करो और न्यारे भी रहो। अनुभव कहता कि ऐसी स्थिति में कभी किसी बात का फिक्र नहीं होता। किसकी चिन्ता करें। कोई भी क्वेश्चन आता, उसका जो अनुकूल जवाब है उसी अनुसार उसका निवारण करो, खत्म करो। चिन्ता क्या करनी है। गाया ही है -- चिन्ता ताकी कीजिए जो अनहोनी होए...। तो अनहोनी होनी है क्या जो चिन्ता करूँ? नहीं, होनी है सो होगी। मरने वाले टाइम पर मरेंगे। जीने वाले टाइम पर जी रहे हैं।

तो हम सभी टीचर्स को खास कहती कि हम सन्तुष्ट, हमारे साथी सन्तुष्ट, सेन्टर, क्लास, सेवा... सबमें सन्तुष्ट। सन्तुष्टमणि का सर्टीफिकेट चाहिए। कई बार छोटी-मोटी बातों से सन्तुष्टता नहीं होती है तो फिर डिस्टर्बेन्स होती है। सन्तुष्ट रहना है और सबको सन्तुष्ट रखना है।

दूसरा, हमने साकार में बाबा को देखा, बेहद का बाबा बहुत बडी दिल वाला था। तो बाबा कहता -- हे मेरे निमित्त बने हुए बच्चे -- कंजूसी नहीं करो। कोई-कोई में ऐसी कंजूसी का स्वभाव है, दाल बनायेंगे तो सब्जी नहीं बनायेंगे, सब्जी बनायेंगे तो दाल नहीं बनायेंगे। कोई आयेंगे, जायेंगे तो कहेंगे पानी पिलाओ, टोली भी नहीं खिलायेंगे। कहेंगे मेरे पास कोई करने वाला नहीं है। अरे कोई नहीं तो अपने हाथ कहाँ गये, अपने हाथ नहीं चला सकते हो क्या? हम सर्वेन्ट हैं। हाथ से पकोडी बनाके, गरम चाय बनाके पिलाओ न कि नखरे करो। यह संस्कार छोड़ दो। हम सब बेहद बाबा के बेहद बच्चे, बिन कौडी बादशाह हैं। तो बादशाह बनकर रहो, कंजूस

नहीं। बडी दिल से खिलायेंगे तो भण्डारा भरपूर हो जायेगा, नहीं तो सदा कमी बनी रहेगी। कंजूस माना मनहूस। संगमयुग है सेवा का युग, न कि आराम से सोने-खाने-पीने का युग...। संगमयुग मेहनत का युग है। बाप मिला सब मिला और सब बाबा के बच्चे हैं। तुम उनको एक खिलायेंगे तो वो तुम्हें दस खिलायेंगे, यह नैचुरल होता है। इसलिए बडी दिल वाले बनो। हम प्रवृत्ति वालों को भी कहते बडी दिल रखो। बडी दिल से रहो, कंजूस नहीं। भले दाल भात खाओ परन्तु प्यार से बडी दिल से खाओ तो सदा भण्डारा भरपूर काल कंटक दूर हो जायेगा। अच्छा खुश रहो, राजी रहो न बिसरो न याद रहो पर सदा आबाद रहो। अच्छा - ओम् शान्ति।